श्रीमदभागवत कथा ज्ञान महायज्ञ

भागवत भास्कर श्री कृष्णचन्द्र शास्त्रीजी के मुखारविन्द से

स्तुति पत्रिका

श्रद्धेय श्री कृष्ण चन्द्रजी शास्त्री (ठाकुर जी)

परम पूज्य ब्रज मण्डल के गौरव, ब्रजवासियों के प्रिय, **भागवत भास्कर श्रद्धेय पं. श्री कृष्णचन्द्र शास्त्री (श्री ठाकुर जी)** का जन्म वृन्दावन के निकट लक्ष्मणपुरा ग्राम (मथुरा, उ. प्र.) में 1 जुलाई 1960 को हुआ था। पं. श्री रामशरण उपाध्याय और श्रीमती चन्द्रवती देवी की इस मेधावी संतान ने अपने पितामह पं. भूपदेव उपाध्याय से बचपन में ही रामायण एवं कृष्ण चरित्र का मनोयोग से श्रवण किया। श्री ठाकुर जी को प्रारम्भिक शिक्षा के समय ही वीतराग **श्री स्वामी रामानुजाचार्य जी महाराज** का सान्निध्य मिला, जिनसे इन्हें गीता, वाल्मीकि रामायण, श्रीमद्भागवत एवं विशिष्टाद्वैत वेदान्त की भी शिक्षा मिली। श्री जगन्नाथपुरी स्थित श्रीजीयर स्वामी मठ के मठाधीश **श्री गरुड़ध्वजाचार्य जी महाराज** से श्रीवैष्णव दीक्षा प्राप्त हुई तथा श्रीवैष्णव दीक्षा देने का अधिकार भी मिला।

बचपन में ही ठाकुर जी को रासलीला का भी अनुभव प्राप्त हुआ और

छात्र जीवन में मात्र 15 वर्ष की उम्र में एक निपुण प्रवक्ता के रूप में प्रतिष्ठित हुए। व्याकरण में आचार्य और दर्शन शास्त्र में एम.ए. की उपाधि से सम्पन्न श्री ठाकुर जी ने शास्त्रीय संगीत का भी अध्ययन किया। श्री ठाकुर जी सम्भवतः देश के प्रथम ऐसे व्यास हैं, जो मात्र 48 वर्ष की आयु में श्रीमद्भागवत सप्ताह कथा के 826 विशाल आयोजन कर चुके हैं। आपके निर्देशन में वृन्दावन में श्री कृष्ण प्रेम संस्थान की स्थापना हुई, जिसमें भागवत एवं वेदादि शिक्षाओं की निःशुल्क व्यवस्था की गई है।

आपकी कथा शैली इतनी सरस एवं सरल है कि सभी श्रेणी के श्रोता भरपूर आनन्द लेते हैं। हिन्दू संस्कृति से ओत-प्रोत श्री ठाकुर जी, भागवत गीता, उपनिषद् आदि से संबंधित किसी भी शंका का समाधान बड़ी सरलता से करने में समर्थ हैं। श्री ठाकुर जी की शास्त्र सम्मत मान्यता है कि श्रीमद् भागवत श्री कृष्ण स्वरूप ही है। विद्वत्-समाज द्वारा **'भागवत भास्कर'** उपाधि से सम्मानित श्री ठाकुर जी हिन्दू संस्कृति एवं वैदिक सनातन धर्म के व्यापक प्रचार हेतु विदेशों में भी श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

श्रीमद्भागवत क्या है?

- श्रीमद्भागवत स्वयं भगवान् का वाङ्मय स्वरूप है।
- श्रीमद्भागवत स्वयं भगवान् के श्री मुख से निःसृत ग्रन्थ है।
- श्रीमद्भागवत पंचम वेद है।
- श्रीमद्भागवत समस्त वेदों और उपनिषदों का सार है।
- श्रीमद्भागवत रस - सिन्धु है।
- श्रीमद्भागवत ज्ञान, भक्ति, वैराग्य का समुच्चय है।
- श्रीमद्भागवत सभी पुराणों में सर्वोपरि है, इसलिए 'श्रीमद्' शब्द के तिलक से इसे अलंकृत किया गया है।
- श्रीमद्भागवत भगवद्तत्त्व को प्रकाशित करने वाला अलौकिक प्रकाश-पुंज है।

- मृत्यु को मंगलमय बनाने वाला ग्रन्थ है - श्रीमद्भागवत।
- विशुद्ध प्रेमशास्त्र है - श्रीमद्भागवत।
- मानव जीवन को भगवत्परायण बनाने वाला ग्रन्थ है - श्रीमद्भागवत।
- श्रीमद्भागवत आध्यात्मिक रस वितरण की सार्वजनिक प्याऊ है।
- व्यक्ति को शांति एवं समाज को क्रांति देने वाला शास्त्र है - श्रीमद्भागवत।
- श्रीमद्भागवत परम सत्य की अनुभूति कराने वाला शास्त्र है।
- काल के भय से मुक्त कराने वाला ग्रन्थ है - श्रीमद्भागवत।
- श्रीमद्भागवत कथा का श्रवण, मनन एवं चिन्तन भक्ति प्रदाता है।
- मानव जीवन का एक मात्र लक्ष्य - प्राप्ति का सहज साधन है - श्रीमद्भागवत।
- भगवान् के अवतारों का इतिहास है - श्रीमद्भागवत और है नर को नारायण पद प्राप्त कराने के लिए उत्तम सोपान।

आरती - 1

श्याम तेरी आरती कन्हैया तेरी आरती।
सारा संसार करेगा हाथ जोड़ के।।
सिर पै सोहना मुकुट विराजै। गल बैजन्ती माला साजै,
और फूलन के हार। करेगा हाथ जोड़ के।। श्याम तेरी ...।।1।।
ब्रह्मादिक तेरौ यश गावै, नारद सारद ध्यान लगावै,
और करें जय जयकार। करेगा हाथ जोड़ के।। श्याम तेरी ...।।2।।
मै हूँ दीनन दुखिया भारी, आया हूँ प्रभु शरण तुम्हारी,
रखियो लाज हमार, करेगा हाथ जोड़ के।। श्याम तेरी ...।।3।।
अपने चरण की भक्ति दीजौ, अपनी शरण में मोहि रख लीजौ,
करौ भव सागर पार। करेगा हाथ जोड़ के।। श्याम तेरी ...।।4।।
प्रेम सहित जो आरती गावै, श्री राधामाधव के पद पावै,
बढ़ै सुयश अपार। करेगा हाथ जोड़ के।। श्याम तेरी ...।।5।।

आरती - 2

हे गिरधर तेरी आरती गाऊँ।
बाँकेबिहारी तेरी आरती गाऊँ।।
मोर मुकुट प्यारे शीश पै सोहे। प्यारी वंशी मेरौ, मन मोहै।।
देख छवि बलिहारी जाऊँ।। हे गिरधर...।।1।।
चरणों से निकली गंगा प्यारी। जिसने सारी दुनियाँ तरी।
उन चरणों का दर्शन पाऊँ।। हे गिरधर...।।2।।
व्यास दास के नाथ आप हो। सुख दुःख जीवन साथ आप हो।
हरि चरणों में शीश नवाऊँ।। हे गिरधर...।।3।।
संग सोहे बृषभान दुलारी। (राधा प्यारी) ललितादिक सखियाँ न्याँरी।
वास सदा वृन्दावन पाऊँ।। हे गिरधर...।।4।।
चरण कमल की सेवा दीजौ। (भक्ति दीजौ) सेवक जान शरण में लीजौ।
शरण दौड़ में अन्त न जाऊँ। हे गिरधर...।।5।।

नित्य स्तुति : श्री गोविन्ददामोदरस्तोत्रम्

करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्।
वटस्य पत्रस्यपुटेशयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ।।1।।

श्रीकृष्ण गोविंद हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव गोविंद दामोदर माधवेति ।।2।।

विक्रेतु कामाखिलगोपकन्या मुरारिपादर्पितचित्तवृत्तिः।
दध्यादिकं मोहवशादवोचद् गोविंद दामोदर माधवेति ।।3।।

गृहे गृहे गोपवधूकदम्बाः सर्वे मिलित्वा समवाप्ययोगम्।
पुण्यानि नामानि पठन्ति नित्यं गोविंद दामोदर माधवेति ।।4।।

सुखंशयानानिलयेनिजेऽपिनामानिविष्णोः प्रवदन्तिमर्त्याः।
ते निश्चितं तन्मयतां ब्रजन्ति गोविंद दामोदर माधवेति ।।5।।

जिह्वेसदैवं भज सुन्दराणि नामानि कृष्णस्य मनोहराणि।
समस्त भक्तार्तिविनाशनानि गोविंद दामोदर माधवेति ।।6।।

सुखावसाने इदमेवसारं दुःखावसाने इदमेव ज्ञेयम्।
देहावसाने इदमेव जाप्यं गोविंद दामोदर माधवेति ।।7।।

जिह्वे रसज्ञे मधुरप्रिया त्वं सत्यं हितं त्वां परमं वदामि।
आवर्णयेत्वाम् मधुराक्षराणि गोविंद दामोदर माधवेति ।।8।।

त्वामेव याचे मम देहि जिह्वे समागते दण्डधरे कृतान्ते।
वक्तव्यमेवं मधुर सुभक्त्या गोविंद दामोदर माधवेति ।।9।।

श्रीकृष्ण राधावर - गोकुलेश गोपाल गोवर्धन नाथ विष्णो।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव गोविंद दामोदर माधवेति ।।10।।

नित्य स्तुति : श्रीकृष्णाष्टकम्

भजे ब्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं
स्वभक्तचित्तरंजनं सदैव नन्दनन्दनम्।
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकं
अनंगरंगसागरं नमामि कृष्णनागरम् ।।1।।
मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनम्
विधूतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम्।
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं
महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णवारणम् ।।2।।
कदम्बपुष्पकुण्डलं सुचारुगण्डमण्डलम्
व्रजांगनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम्।
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया
युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकम् ।।3।।

सदैवपादपंकजं मदीयमानसे निजं
दधानमुक्तमालकं नमामि नन्दबालकम्।
समस्त दोषशोषणं समस्तलोकपोषणं
समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम् ।।4।।
भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं
यशोमतीकिशोरकं नमामि चित्तचोरकम्
दृगन्तकान्तभंगिनं सदासदालिसंगिनं
दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दनन्दनम् ।।5।।
गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरं
सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनम्।
नवीनगोपनागरं नवीनकेलिलम्पटं
नमामि मेघसुन्दरं तडित्प्रभालसत्पटम् ।।6।।

समस्तगोपनन्दनं हृदम्बुजैकमोदनं
नमामि कुञ्जमध्यगं प्रसन्नभानुशोभनम्।
निकामकामदायकं दृगन्तचारुशायकं
रसालवेणुगायकं नमामि कुञ्जनायकम् ।।7।।
विदग्धगोपिकामनो मनोज्ञतल्पशायिनं
नमामि कुञ्जकानने प्रवृद्धवह्निपायिनम्।
किशोरकान्तिरंजितं दृगंजनं सुशोभितं
गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्रीविहारिणम् ।।8।।
यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा
मया सदैव गीयतां तथाकृपा विधीयताम्।
प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीत्य यः पुमान्
भवेत्स नन्दनन्दने भवे भवे सुभक्तिमान् ।।9।।

।। इतिश्री मच्छंकराचार्यकृतं श्रीकृष्णाष्टकं सम्पूर्णम्।।

आरती बालकृष्ण की

आरती बालकृष्ण की कीजै। अपनो जनम सुफल करि लीजै।।
श्रीजसुदा को परम दुलारौ, बाबा की अखियन को तारौ।।
गोपिन के प्राणन सौं प्यारौ, इनपे प्राण निछावर कीजै।।आरती ०
बलदाऊ को छोटो भईया, कनुआँ कहि-कहि बोलत मैया।।
परम मुदित मन लेत बलैया, अपनौ सरबस इनकूँ दीजै।।आरती ०
श्रीराधावर सुघर कन्हैया, ब्रज जन कूँ नवनीत खवैय्या।।
देखत ही मन लेत चुरैया, यह छवि नयनन में भरि लीजै।।आरती ०
तोतरि बोलन मधुर सुहावै, सखन संग खेलत सुख पावै।।
सोई सुकृती जो इनको ध्यावै, अब इनकूँ अपनो करि लीजै।।आरती ०

❖❖❖

मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।1।।

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।2।।

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।3।।

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।4।।

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं स्मरणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम ।।5।।

गुंजा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कललं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम ।।6।।

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम ।।7।।

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सुष्टिर्मधुरा।
बलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम ।।8।।

।। इति श्रीमद्वल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्।।

शंकर स्तुति

नमामी शमीशान निर्वाणरूपम्। विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम्।।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहम्। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्।।
निराकारमोंकारमूलं तुरीयम्। गिराज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम्।।
करालं महाकालकालं कृपालम्। गुणागार संसारपारं नतोऽहम्।।
तुषाराद्रि संकाश गौरं गंभीरम्। मनोभूत कोटिप्रभा श्री शरीरम्।।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा। लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा।।
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालम्। प्रसन्नानं नीलकण्ठं दयालम्।।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालम्। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशम्। अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।।

त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्।।
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।।
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।
न यावद् उमानाथ पादारविन्दम्। भजंतीह लोके परे वा नराणाम्।।
न तावत्सुखं शांति सन्तापनाशम्। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्।।
ना जानामि योगं जपं नैव पूजाम्। नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम्।।
जरा जन्मदुःखौघ तातप्यमानम्। प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो।।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।।

गोपीगीतम्

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावकास्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ।।1।।

शरदुदाशये साधुजातसत् सरसिजोदर श्रीमुषा दृशा।
सुरतनाथ तेऽशुक्लदासिका वरद निघ्नतो नेह किं वधः ।।2।।

विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद् वर्षमारुताद् वैद्युतानलात्।
वृषमयात्मजाद् विश्वतोभयादृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः ।।3।।

न खलु गोपिकानन्दनो भवानखिलदेहिनामन्तरात्मदृक्।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये सख उदेयिवान् सात्वतां कुले ।।4।।

विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते चरणमीयुषां संसृतेर्भयात्।
करसरोरुहं कान्त कामदं शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम् ।।5।।

व्रजजनार्तिहन् वीर योषितां निजजनस्मयध्वंसनस्मित।
भज सखे भवत्किंकरीः स्म नो जलरुहाननं चारु दर्शय ।।6।।

प्रणतदेहिनां पापकर्शनं तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम्।
फणिफणार्पितं ते पदाम्बुजं कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ।।7।।

मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण।
विधिकरीरिमा वीर मुह्यतीरधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः ।।8।।

तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम्।
श्रवणमंगलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ।।9।।

प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं विहरणं च ते ध्यानमंगलम्।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि ।।10।।

चलसि यद् व्रजाच्चारयन् पशून् नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम्।
शिलतृणांकुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त गच्छति ।।11।।

दिनपरिक्षये नीलकुन्तलैर्वनरुहाननं विभ्रदावृतम्।
घनरजस्वलं दर्शयन्मुहुर्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि ।।12।।

प्रणतकामदं पद्मजार्जितं धरणिमण्डनं ध्येयमापदि।
चरणपंकजं शन्तमं च ते रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन् ।।13।।

सुरतवर्धनं शोकनाशनं स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम्।
इतररागविस्मारणं नृणां वितर वीर नस्तेऽधरामृतम् ।।14।।

अटति यद् भवानह्नि काननं त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम्।
कुटिल कुन्तलं श्रीमुखं च ते जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद् दृशाम् ।।15।।

पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवानति विलंघय तेऽन्त्यच्युतागताः।
गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि ।।16।।

रहसि संविदं हृच्छयोदयं प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम्।
बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः ।।17।।

व्रजवनौकसां व्यक्तिरंग ते वृजिनहन्त्रयलं विश्वमंगलम्।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम् ।।18।।

यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु
भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु।
तेनाटवीमटसि तद् व्यथते न किंस्वित्
कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ।।19।।

गोपीगीतम् का नित्य नियमित प्रेम से पाठ करने वाले पर राधारानी कृपा करके गोपाल से मिला देती हैं। - श्री ठाकुर जी

नामसंकीर्तनं यस्य सर्वपापप्रणाशन्।
प्रणामो दुःखशमनस्तं नमामि हरि परम्।

श्रीमद्भागवत जी की आरती

आरती अतिपावन पुरान की, धर्म-भक्ति-विज्ञान-खान की।। टेक।।
महापुराण भागवत निर्मल, शुक-मुख-विगलित निगम-कल्प-फल।
परमानन्द सुधा-रसमय कल, लीला-रति-रस रसनिधान की।। आरती।।
कलिमथ-मथनि त्रिताप-निवारिणि, जन्म-मृत्युमय भव-भयहारिणी।
सेवत सतत सकल सुखकारिणि, सुमहौषधि हरि-चरित गान की।। आरती।।
विषय-विलास-विमोह विनाशिनि, विमल-विरग-विवेक विकासिनि।
भगवत्-तत्त्व-रहस्य-प्रकाशिनि, परम ज्योति परमात्मज्ञान की ।। आरती।।
परमहंस-मुनि-मन उल्लासिनि, रसिक-हृदय-रस-रासविलासिनि।
भुक्ति-मुक्ति-रति-प्रेम सुदासिनि, कथा अकिंचन प्रिय सुजान की।। आरती।।

श्रीमद्भागवत् के विविध सिद्ध मंत्रों का प्रयोग

- संकट निवृत्ति के लिए -

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने। प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः।।

- लक्ष्मी प्राप्ति के लिए -

तत् आरम्भ ननदस्य ब्रजः सर्वसमृद्धिमान। हरेर्निवासात्मगुणैः रमाक्रीडामभुत्रप।।

- वर प्राप्ति के लिए -

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि। नन्दगोपसुतं देवी पतिं में करु ते नमः।।

- पुत्र प्राप्ति के लिए -

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि में तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

- विद्या प्राप्ति के लिए -

मा शारदे नमस्तुभ्यं काश्मीरपुरवासिनी। न्वामहं प्रार्थये नित्यं निद्या दान्ज्च देही मे।।

- सर्वत्र विजय प्राप्ति के लिए -

विजयाभिमुखा राजा श्रत्वैतदभ्यिाति यान्। बर्लि तस्मै हरन्त्यग्रे राजानः पृथवे यथा।।

- भगवत्प्राप्ति के लिए -

हा नाथ रमण प्रेष्ठ क्वासि-क्वासि महाभुज। दास्यास्ते कृपणया में सखे दर्शय सन्निधिम्।।

Jai Shri Krishna

Please visit Shri Thakurji's web site:

http://www.ShriThakurji.org

for his online audio, video, bhajans, and publications.